JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान"

डा0 मारकण्डेय दीक्षित
प्राचार्य, न्यू एरा कालेज आफ साइन्स एण्ड टेक्नोलाजी,गाजियाबाद

Abstract

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं के योगदान को शामिल किए बिना स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास ही अधूरा हो जाता है। स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में महिलाओं द्वारा दिये गये बलिदान का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी बहादुरी, निःस्वार्थ सेवा एवं बलिदान अतुलनीय है। हम लोगों में से बहुत से लोग इस तथ्य से अनभिज्ञ हैं कि बहुत सारी महिलाओं ने पुरूषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई लड़ी। महिलाओं ने अपने आत्मिक बल तथा पूरे साहस से स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी। स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए महिलाओं ने बहुत सी प्राचीन परम्पराओं को तोड़ा तथा अपनी परम्परागत घरेलू जिम्मेदारियों को भी छोड़ा। इसलिए भारतीय स्वतंत्रता के आन्दोलन में उनका योगदान सराहनीय एवं वन्दनीय है। पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं के लिए यह बहुत आसान नहीं था कि वे एक बहादुर की तरह सियासत की लड़ाई लड़ें। लेकिन उन्होंने लोगों के इस मिथ को तोड़ दिया कि महिलाएं केवल घरेलू कार्य करने के लिए होती हैं। अधिकांश महिलाओं ने आन्दोलन में अपनी प्राणों की आहुति भी दी, उनमें से एक रानी लक्ष्मीबाई का नाम बड़े आदर से लिया जाता है क्योंकि वे अंग्रेजों से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुई, वीरगति को प्राप्त होने से पहले उन्होंने अंग्रेजो की दाँत खट्टे कर दिए। ऐसी ही स्वतंत्रता के आन्दोलन में सम्मिलित महिलाओं को यह शोध पत्र समर्पित है।

प्रस्तावना

भारतीय समाज में स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। महिलाएं दबी कुचली थी, इसका मुख्य कारण था पुरूष प्रधान समाज का होना। समाज में यह मान्यता प्रचलित थी कि महिलाओं का प्रमुख दायित्व घरेलू काम काज सम्भालना है इसलिए उन्हें अन्य क्रियायों में भाग लेने की अनुमति नहीं दी जा सकती। यहां तक कि पुरूषों के बीच उनको अपने विचार रखने की भी स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थी। पुरूषों के फैसले महिलाओं पर थोप दिए जाते थे। जैसे बाल विवाह, सती प्रथा, विधवाओं को पुर्नविवाह करने की अनुमति न देना, लड़कियों की भ्रूण हत्या आदि बहुत आम बात थी। ईस्ट इण्डिया के शासन के दौरान कई समाज सुधारक राजा राम मोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्या सागर तथा ज्योतिबा फूले इत्यादि ने भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए बहुत संघर्ष किया, इस काल में बहुत सी महिलाएं मार्सल आर्ट में पारंगत की गयी। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सन् 1817 में महिलाओं का प्रवेश हो गया रानी लक्ष्मीबाई, भीमाबाई होल्कर, मैडम भीकाजी कामा आदि ने अंग्रेजों की विरूद्ध स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलनकारियों में महिलाओं की एक लम्बी श्रृंखला है।

शोध उददेश्य

1. सामान्य रूप से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन के बारे में अध्ययन करना।
2. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में महिलाओं के योगदान का वर्णन करना।
3. विभिन्न महिला स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलनकारियों के बारे में जानकारी देना।
4. भारतीय महिलाओं के आर्थिक तथा समाजिक स्थिति का वर्णन करना।
5. महिलाओं के बलिदान और कार्यो को जानना।

शोध विधिः–

शोध पत्र लिखने के लिए विभिन्न पुस्तकों राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित लेखों का अध्ययन किया गया। कह सकते है कि शोध पत्र लिखने के लिए सेकेण्डरी डाटा का प्रयोग किया गया।

स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने वाली महिला नेता

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में पुरूषों के साथ बहुत सारी महिलाओं ने भी भाग लिया। यदि हम महिला नेताओं की सूची बनाएं तो एक लम्बी सूची बनती है। सरोजनी नायडू, रानी लक्ष्मीबाई, विजय लक्ष्मी पंडित, कमला देवी चटोपध्याय तथा मृदुला साराबाई, राष्ट्रीय स्तर की महिला नेता है। राज्य स्तर के महिला नेताओं में दूर्गाबाई देशमुख मद्रास से, रामेश्वरी नेहरू उत्तर प्रदेश से सत्यावती देवी तथा सुभद्राजोशी दिल्ली से, हन्सा मेहता तथा उषा मेहता बाम्बे से इत्यादि। यद्यपि की इस तरह का बॅटवारा करना बहुत दूरूह कार्य है कि कौन क्षेत्रीय स्तर की नेता है और कौन राष्ट्रीय स्तर की नेतृ हैं। क्योंकि कई नेताओं ने क्षेत्रीय स्तर पर कार्य प्रारम्भ किया और राष्ट्रीय स्तर तक गयी। भारतीय महिलाओं के साथ कुछ आयरलैण्ड की महिलाओं जैसे एनी वेसेन्ट तथा मार्गरेट का नाम लिया जाता है। जिन्होंने भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए अंग्रेजो के विरूद्ध लड़ीं तथा अंग्रेजो के शोषण के विरूद्ध अपनी आवाज बुलन्द किया।

भारतीय स्वतत्रता संग्राम में प्रतिभाग करने वाली महिलाएं

➢ **सरोजनी नायडूः–** 1917 के आस–पास के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों में इनका नाम प्रमुखता से लिया जाता है। 1925 में यह कांग्रेस की दूसरी महिला अध्यक्ष बनी। बंगाल विभाजन के समय 1905 में इन्होंने स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में प्रथम बार भाग लिया। दर्शना में नमक सत्याग्रह आन्दोलन में ये एकलौती महिला सत्याग्रही थी। इन्होंने इस सत्याग्रह को नेतृत्व प्रदान किया। इसके लिए उन्हें जेल भेजा गया था। 1942 में अंग्रेजो भारत छोडो आन्दोलन के समय भी गिरफ्तार किया गया। इन्होंने पूरे भारत का भ्रमण किया और महिला सशक्तिकरण एवं राष्ट्रीयता जागृत करने के लिए जगह जगह व्याख्यान दिया। भारतीय महिला संगठन बनाने में भी इनका महत्वपूर्ण योगदान दिया। महिलाओं को मताधिकार दिलाने के लिए एक डेलीगेशन के साथ लन्दन भी गयी।

➢ **रानी लक्ष्मीबाईः**–भारतीय इतिहास में रानी लक्ष्मीबाई जैसा बहादुर और शक्तिशाली योद्धा का अन्य कोई उदाहारण नहीं मिलता। वे देश भक्ति और राष्ट्रीय गौरव की जीती जागती मिसाल है। वह बहुत से लोगो के लिए प्रेरणा की स्रोत हैं। उनका नाम भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

➢ **कमलादेवी चटोपाध्यायः**–1930 में इन्होंने नमक सत्याग्रह में भाग लिया। इन्होंने हैन्डीक्राफ्ट, हैण्डलूम और थीयेटर के विकास के लिए काम किया। भारतीय सरकार ने इन्हें 1955 में पद्म विभूषण से अलंकृत किया।

➢ **एनी वेसेन्टः**–1917 में ये काग्रेस की प्रथम अध्यक्षा बनी, इनकी साथी मार्गरेट ने महिला मताधिकार का बिल तैयार किया और भारत महिला संगठन की भी स्थापना की।

➢ **विजयलक्ष्मी पंडितः**–श्रीमती पंडित अपने राष्ट्रीय आन्दोलन के कार्यो के कारण 1932, 1940 तथा 1942 में तीन बार जेल गयी। नमक सत्याग्रह के समय इन्होंने आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया इन्होंने विदेशी शराब और कपड़ो को छोड़ने के लिए कई जुलूस निकाला इनके साथ इनकी छोटी बच्ची और बहन भी थी। इन्होंने बहुत सारी लड़ाईयां लड़ी और महिलाओं के लिए बहुत सी बाधाओं को भी दूर किया।

➢ **दुर्गावाई देशमुखः**–नमक सत्याग्रह में भाग लेने के लिए इनको तीन साल के लिए जेल में डाल दिया गया। उस समय दक्षिण के प्रसिद्ध आन्दोलनकारी राजाजी और टी0 प्रकाशन जब आन्दोलन के दूसरे कार्यो में व्यस्त थे तब दुर्गाबाई देशमुख ने एक समुह को नेतृत्व प्रदान करते हुए मद्रास के मैरिन बिच पर सत्याग्रह किया। बहुत छोटी उम्र में इन्होंने आन्ध्र महिला सभा तथा हिन्दी बालिका पाठशाला नामक संस्थाओं का गठन कर दिया।

➢ **मृदुला सारावाईः**–बॅटवारे के समय इन्होंने शरणार्थियों तथा भीड़ द्वारा अपहृत बालिकाओं को बचाने के लिए हिन्दू मुस्लिम सबसे संघर्ष किया। 1934 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में गुजरात के डेलीगेशन में इनका चुनाव हुआ

➢ **वसन्तीदासः**–ब्रिटिश राज के समय ये एक सक्रिय आन्दोलकारी थी। इन्होंने बहुत सारे राजनीतिक तथा समाजिक आन्दोलनों में प्रतिभाग किया। स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में ये सक्रिया भाग लेती थी और ये असहयोग आन्दोलन के समय गिरफ्तार भी हुई। 1973 में भारत सरकार ने इन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित भी किया।

➢ **सुचेता कृपलानीः**–1937 में इन्होंने सामाजिक जीवन में प्रवेश किया और 1939 में राजनीतिक जीवन में प्रवेश करते हुए भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस में शामिल हुई। 1940 में इन्होंने फैजाबाद में सत्याग्रह किया और इनको दो वर्ष के लिए जेल में डाल दिया गया। भारत छोड़ो आन्दोलन के समय ये भूमिगत रह कर चुपचाप अंग्रेजो के विरूद्ध आन्दोलन में अपना योगदान देती रहीं।

➢ **कमलादास गुप्ताः**–भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में भाग लेने वाली महिलाओं में यह एक सुयोग्य एवं तेज तर्रार महिला थी। ये जंगतार पार्टी की एक सक्रिय सदस्य थी। भारत छोड़ो आन्दोलन से सम्बन्ध होने के कारण इनको 1942 में गिरफ्तार करके प्रेसीडेन्सी जेल में डाल दिया गया।

➢ **इन्दिरा गाँधीः**–आधुनिक भारत को एक प्रसिद्ध महिला है। 1938 में ये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्य बनी। इन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और 1947 में आजादी मिलने के बाद प्रधानमंत्री के घर के संचालन का बोझ इन पर था। साथ ही बिना थके ये आल्पसंख्यको की आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति के लिए कार्य करती रहीं। साम्यवाद के विरूद्ध इन्होंने जबरदस्त लड़ाई लड़ी।

गाँधी के समय महिलाओं का आन्दोलनः–

गाँधी जी निसंदेह भारतीय संस्कृति के जीते जागते मसाल थे। देश के लोग सम्मान से उन्हें महात्मा कहते हैं। वे एक समाज सुधारक अर्थशास्त्री, राजनेता, दार्शनिक एवं सत्य के पुजारी थे, उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को देश की आम जनता से जोड़ा। स्वतंत्रता आन्दोलन को जन–जन का आन्दोलन बना दिया। उन्होंने लोगो को अन्याय के विरूद्ध लड़ना सिखाया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में महात्मा गाँधी के योगदान को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। उस समय भारत की स्वतंत्रता के लिए हो रहे आन्दोलनों को उन्होंने अकेले ही नेतृत्व प्रदान किया। अंग्रेजों के विरूद्ध शांति और अहिंसा से आन्दोलन को आगे बढ़ाया यह उनकी मुख्य तकनीक थी। 1918 से 1922 के मध्य गाँधी जी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा भारत की स्वतंत्रता के लिए कई सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया गया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन का उद्देश्य असहयोग के द्वारा ब्रिटिश सरकार को कमजोर करना था। गाँधी जी कहा करते थे कि पूर्ण स्वराज तब तक नहीं माना जायेगा जब तक महिलाएं पुरूष की बराबरी में खड़ी न हो। महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में अपनी शक्ति का एहसास होना चाहिए।

गाँधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी महिलाएं

➢ गाँधी जी ने महिलाओं को जातिवाद के विरूद्ध, बाल विवाह के विरूद्ध लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया। महिला शिक्षा को प्रोत्साहित किया। महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

➢ असहयोग आन्दोलन में शिक्षित और मध्यम की अनेक महिलओं अरूणा आसफ अली, सरला देवी तथा मुत्थू लक्ष्मी आदि ने भाग लिया।

➢ गाँधी जी के गिरफ्तार होने के बाद सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सरोजनी नायडू ने गाँधी से प्रभावित होकर आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया। महिला मताधिकार के लिए लड़ाई लड़ी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम अध्यक्ष चुनी गयी।

➢ भारत छोड़ो आन्दोलन के समय उषा मेहता, अरूना आसफ अली जैसे कार्यकर्ताओं ने भूमिगत रहकर आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया।

➢ 1920 में अधिकांश महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में प्रतिभाग किया। इस समय बहुत सारी महिला कार्यकर्ता आगे आयी। उस समय भारतीय महिलाओं ने सामाजिक आर्थिक सभी प्रकार के बन्धनों को दूर कर दिया भारत की स्वतंत्रता के लिए आन्दोलन में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

निष्कर्षः–भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका पर जब दृष्टिपात करते है तो पता चलता है कि महिलाओं ने सड़क से जेल तक जेल से लेकर विधायिका तक किस प्रकार साहस के साथ आन्दोलन किया। बहुत सारे संघर्षो और

प्रयासों के बाद अन्त में भारत 15 अगस्त, 1947 को आजाद हो गया। अपनी मातृभूमि की आजादी के लिए स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में हजारों महिलाओं ने अपनी प्राणाहुति दी, यदि यह कहा जाय कि केवल अहिंसात्मक आन्दोलन से आजादी नहीं मिली बल्कि महिलाओं के सक्रिय योगदान और बलिदान के चलते आजादी मिली तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। विश्व के इतिहास में शायद पहली बार ऐसा हुआ कि एक ऐसा शासन जिसके राज्य में कभी सुर्यास्त नहीं होता था ऐसे महाबली शासक को शांति और अहिंसा से चुनौती देकर आजादी ली गयी। अन्त में यही कह सकते हैं कि स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में महिलाओं का योगदान अतुलनीय है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. **अग्रवाल एम0जी0**, Freedom fighter of India Vol IV, Gyan Publishing house 2008
2. Thaper Suruchi, Women in the Indian National Movement:-unseen faces and unheared vices (1930-32)
3. Ralhan O.P., Eminent Indian women in politics, Anmol Publication Delhi 1995.
4. Agrawal R.C., Constitutional Development and National Movement of India, S.Chand Publishing limited New Delhi 1999.
5. Raju Rajendra, Role of women in India's Freedom struggle, south Asia books 1994.
6. Mody Nawaz, women in India's freedom struggle, Allied publication 2002
7. Chand Tara, History of freedom movement in India Vol IV, Publication division Govt. of India 1961.
8. www.new worldencyclodeia.org